

सामाजिक माध्यम-आधारित पालन-पोषण: जेनरेशन जेड के पारिवारिक मूल्यों एवं व्यवहार पर डिजिटल माध्यमों के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।

¹चिरंजीव जैन

¹सर्टिफाइड पेरेंटिंग कोच

सार—डिजिटल प्रौद्योगिकी के तीव्र विस्तार ने परिवार, पालन-पोषण तथा युवा पीढ़ी के सामाजिक व्यवहार की प्रकृति में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। विशेषतः जेनरेशन जेड ऐसी पीढ़ी है जिसका सामाजिकरण इंटरनेट, स्मार्टफोन, सामाजिक माध्यमों तथा डिजिटल संचार के वातावरण में हुआ है। परिणामस्वरूप पारंपरिक परिवार-आधारित समाजीकरण और डिजिटल माध्यमों से प्राप्त सामाजिक अनुभवों के मध्य निरंतर क्रिया दिखाई देती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य जेनरेशन जेड के पारिवारिक मूल्यों एवं व्यवहार पर सामाजिक माध्यम-आधारित पालन-पोषण के प्रभाव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। अध्ययन में पारिवारिक संचार, अभिभावकीय निगरानी, डिजिटल स्वतंत्रता, पारिवारिक उत्तरदायित्व, पारंपरिक मूल्यों, स्वायत्तता तथा व्यवहारगत परिवर्तन को प्रमुख आयामों के रूप में ग्रहण किया गया है।

अध्ययन के लिए प्रस्तावित रूप से 300 जेनरेशन जेड उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य तथा मानक विचलन का प्रयोग किया गया है। उदाहरणात्मक परिणामों से संकेत मिलता है कि सामाजिक माध्यम परिवार के भीतर संचार और सूचना-साझाकरण के नए अवसर उपलब्ध कराते हैं, जबकि अत्यधिक डिजिटल संलग्नता आमने-सामने संवाद, पारिवारिक सहभागिता तथा पारंपरिक पारिवारिक अनुशासन को प्रभावित कर सकती है। अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि सक्रिय एवं संवादात्मक अभिभावकीय मध्यस्थता केवल प्रतिबंधात्मक नियंत्रण की अपेक्षा अधिक संतुलित डिजिटल पालन-पोषण की दिशा प्रदान कर सकती है। पूर्ववर्ती शोध भी अभिभावकीय मध्यस्थता को बच्चों एवं किशोरों के ऑनलाइन अनुभवों से जोड़ता है।

मुख्य शब्द—सामाजिक माध्यम, सामाजिक माध्यम-आधारित पालन-पोषण, जेनरेशन जेड, पारिवारिक मूल्य, पारिवारिक व्यवहार, डिजिटल समाजीकरण, अभिभावकीय मध्यस्थता।

I. प्रस्तावना

समाज में परिवार प्राथमिक समाजीकरण की सबसे महत्वपूर्ण संस्था है, जिसके माध्यम से व्यक्ति भाषा, संस्कृति, नैतिकता, अनुशासन, उत्तरदायित्व, सामाजिक अपेक्षाओं तथा पारस्परिक संबंधों के मानदंडों को सीखता और आत्मसात करता है। परिवार व्यक्ति के व्यक्तित्व-विकास के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक प्रतिमानों के हस्तांतरण का प्रमुख माध्यम भी है। इस दृष्टि से परिवार को केवल जैविक संबंधों की इकाई न मानकर ऐसी सामाजिक संस्था के रूप में समझा जा सकता है, जहाँ व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन के प्रारंभिक व्यवहार-पैटर्न और मूल्य-व्यवस्था का निर्माण करता है (बर्जर एवं लक्मान, 1966)।

पारंपरिक भारतीय समाज में परिवार व्यक्ति के मूल्य-निर्माण, सामाजिक अनुशासन तथा सामूहिक उत्तरदायित्व का केंद्रीय आधार रहा है। भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में पारस्परिक निर्भरता, बड़ों के प्रति सम्मान, सामूहिक निर्णय, उत्तरदायित्व तथा पारिवारिक एकता जैसे मूल्य महत्वपूर्ण रहे हैं। किंतु आधुनिकता, नगरीकरण, वैश्वीकरण तथा संचार प्रौद्योगिकी के विस्तार ने परिवार की अंतःक्रिया और सामाजिक संबंधों के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। विशेष रूप से डिजिटल प्रौद्योगिकी ने परिवार के सदस्यों के बीच संचार तथा सामाजिक सहभागिता के लिए नए अवसरों का निर्माण किया है (कास्टेल्स, 2010)।

वर्तमान समय में परिवार का सामाजिक जीवन केवल प्रत्यक्ष अथवा आमने-सामने की अंतःक्रिया तक सीमित नहीं है। व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक तथा अन्य सामाजिक माध्यम परिवार के सदस्यों के संचार, मनोरंजन, सूचना-अर्जन, आत्म-अभिव्यक्ति तथा सामाजिक सहभागिता के महत्वपूर्ण माध्यम बन चुके हैं। डिजिटल माध्यमों के विस्तार ने ऐसी संचार-व्यवस्था विकसित की है जिसमें भौगोलिक दूरी के बावजूद व्यक्ति निरंतर संपर्क बनाए रख सकता है। इस प्रकार डिजिटल संचार ने सामाजिक संबंधों को नए समय-स्थान संबंधों के भीतर पुनर्गठित किया है (कास्टेल्स, 2010)।

जनरेशन जेड के संदर्भ में यह परिवर्तन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह पीढ़ी इंटरनेट, स्मार्टफोन तथा सामाजिक माध्यमों के व्यापक प्रसार के काल में बड़ी हुई है। इसलिए इसके लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन सामाजिक संसार पूर्णतः पृथक क्षेत्र नहीं हैं, बल्कि दोनों परस्पर संबद्ध सामाजिक अनुभवों का निर्माण करते हैं। वाल्केनबर्ग एवं पियोत्रोव्स्की (2017) के अनुसार, युवाओं के जीवन में डिजिटल माध्यम आत्म-प्रस्तुतीकरण, सामाजिक संबंधों, सामाजिक कौशल तथा मीडिया के बहुकार्यण जैसे अनेक सामाजिक एवं व्यवहारात्मक आयामों से जुड़े हैं।

डिजिटल माध्यमों के व्यापक प्रसार का प्रभाव किशोरों के दैनिक जीवन में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। Pew Research Center के 2024 के अमेरिकी किशोर सर्वेक्षण में लगभग आधे किशोरों ने बताया कि वे इंटरनेट का लगभग निरंतर उपयोग करते हैं (प्यू रिसर्च सेंटर, 2024)। यह तथ्य इस बात को रेखांकित करता है कि डिजिटल परिवेश वर्तमान किशोर जीवन का स्थायी सामाजिक संदर्भ बन चुका है। तथापि, किसी एक देश के सर्वेक्षण के निष्कर्षों को भारतीय किशोरों पर सीधे लागू करने के बजाय उन्हें व्यापक डिजिटल प्रवृत्ति के संदर्भ में देखना अधिक उपयुक्त होगा।

डिजिटल परिवेश के विस्तार ने पालन-पोषण की पारंपरिक अवधारणा को भी परिवर्तित किया है। पूर्व में अभिभावकीय नियंत्रण मुख्यतः इस बात पर केंद्रित रहता था कि बच्चे कहाँ जाएँ, किन व्यक्तियों के साथ समय बिताएँ, क्या देखें और किस प्रकार का व्यवहार करें। वर्तमान डिजिटल परिवेश में अभिभावकों के सामने अतिरिक्त प्रश्न उपस्थित हुए हैं—बच्चे ऑनलाइन क्या देखते हैं, किनसे संपर्क करते हैं, किस प्रकार की सामग्री साझा करते हैं, कितने समय तक ऑनलाइन रहते हैं तथा डिजिटल सामग्री का उनके व्यवहार एवं मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है।

लिविंगस्टोन एवं हेल्स्पर (2008) ने बच्चों तथा किशोरों के इंटरनेट उपयोग के संदर्भ में अभिभावकीय मध्यस्थता के विभिन्न रूपों का अध्ययन किया। उन्होंने सक्रिय सह-उपयोग, संवादात्मक मार्गदर्शन, नियम-निर्धारण तथा तकनीकी नियंत्रण जैसी रणनीतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया। इससे स्पष्ट होता है कि डिजिटल युग में पालन-पोषण केवल प्रतिबंध लगाने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसमें संवाद, मार्गदर्शन, निगरानी तथा डिजिटल सुरक्षा भी सम्मिलित हैं।

नाथनसन (1999) ने मीडिया-मध्यस्थता के संदर्भ में सक्रिय तथा प्रतिबंधात्मक अभिभावकीय रणनीतियों के महत्व को रेखांकित किया। उनके अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि अभिभावकीय मध्यस्थता का प्रभाव केवल नियंत्रण की मात्रा से निर्धारित नहीं होता, बल्कि नियंत्रण के स्वरूप, संवाद की प्रकृति तथा बच्चे को दी जाने वाली व्याख्या भी महत्वपूर्ण होती है। अतः डिजिटल पालन-पोषण को केवल “नियंत्रण” के रूप में समझना इसकी सामाजिक जटिलता को सीमित कर देगा।

सामाजिक माध्यम-आधारित पालन-पोषण को ऐसी पालन-पोषण प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है जिसमें अभिभावक सामाजिक माध्यमों तथा डिजिटल तकनीकों के माध्यम से बच्चों एवं किशोरों के व्यवहार, सामाजिक संपर्क, सूचना-अर्जन, मूल्य-निर्माण तथा दैनिक गतिविधियों को समझने, निर्देशित करने, नियंत्रित करने अथवा सहयोग प्रदान करने का प्रयास करते हैं। यह प्रक्रिया अभिभावकीय निगरानी के साथ-साथ डिजिटल संवाद, सह-अनुभव, मार्गदर्शन तथा विश्वास-निर्माण को भी सम्मिलित करती है।

II. अध्ययन की पृष्ठभूमि

जनरेशन जेड के लिए डिजिटल माध्यम केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि सामाजिक पहचान, मित्रता, आत्म-अभिव्यक्ति, सूचना-अर्जन तथा सामाजिक सहभागिता के महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। वाल्केनबर्ग एवं पियोत्रोव्स्की (2017) के अनुसार, डिजिटल मीडिया युवाओं के सामाजिक संबंधों और आत्म-प्रस्तुतीकरण की प्रक्रियाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस कारण डिजिटल व्यवहार को पारिवारिक व्यवहार से अलग करके देखना कठिन होता जा रहा है।

डिजिटल माध्यम परिवार को अनेक सकारात्मक अवसर भी प्रदान करते हैं। परिवार के सदस्य भौगोलिक दूरी के बावजूद निरंतर संपर्क बनाए रख सकते हैं, शैक्षिक एवं सामाजिक सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकते हैं तथा पारिवारिक घटनाओं में डिजिटल माध्यमों से सहभागिता कर सकते हैं। किंतु दूसरी ओर, डिजिटल उपकरणों का अत्यधिक अथवा असंतुलित उपयोग प्रत्यक्ष संवाद तथा साझा पारिवारिक समय को प्रभावित कर सकता है। सर्वेक्षण में 46% किशोरों ने बताया कि उनके माता-पिता उनसे बातचीत करते समय कम-से-कम कभी-कभी अपने फोन से विचलित रहते हैं। इसी सर्वेक्षण में लगभग चार में से दस अभिभावक-किशोर युगलों ने फोन-उपयोग को लेकर नियमित विवाद की सूचना दी (प्यू रिसर्च सेंटर, 2024)। यह तथ्य महत्वपूर्ण है क्योंकि डिजिटल माध्यम केवल किशोरों के व्यवहार को ही प्रभावित नहीं करते, बल्कि अभिभावकों के व्यवहार और पारिवारिक अंतःक्रिया को भी प्रभावित कर सकते हैं।

डिजिटल प्रौद्योगिकी और किशोरों के जीवन के संबंध को समझते समय एकरेखीय निष्कर्ष से बचना भी आवश्यक है। ऑडगर्स एवं जेन्सेन (2020) ने डिजिटल प्रौद्योगिकी तथा किशोर मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित शोधों की समीक्षा करते हुए पाया कि उपलब्ध साक्ष्य मिश्रित हैं। विभिन्न अध्ययनों में छोटे सकारात्मक, नकारात्मक अथवा नगण्य संबंध प्राप्त हुए हैं। इसलिए डिजिटल माध्यमों को अपने-आप में परिवार या किशोरों के लिए लाभकारी अथवा हानिकारक मानने के बजाय उनके उपयोग की प्रकृति, अवधि, सामाजिक संदर्भ तथा पारिवारिक परिस्थितियों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

इस प्रकार डिजिटल माध्यमों का प्रभाव एकरेखीय न होकर द्वंद्ववात्मक है। वे परिवार के सदस्यों को जोड़ सकते हैं, दूरस्थ संबंधों को बनाए रखने में सहायता कर सकते हैं तथा सूचना एवं सहयोग के नए अवसर प्रदान कर सकते हैं; दूसरी ओर, अत्यधिक या असंतुलित उपयोग प्रत्यक्ष संवाद, साझा समय तथा पारिवारिक सहभागिता को प्रभावित कर सकता है। इसी प्रकार अभिभावकीय मध्यस्थता भी केवल नियंत्रण का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह संवाद, विश्वास, स्वायत्तता, सुरक्षा तथा पारिवारिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया है। जनरेशन जेड के संदर्भ में सामाजिक माध्यम-आधारित पालन-पोषण का अध्ययन समकालीन परिवार में हो रहे सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से यह अध्ययन इस प्रश्न पर केंद्रित हो सकता है कि डिजिटल माध्यमों के

व्यापक उपयोग के बीच पारिवारिक मूल्य किस प्रकार पुनर्गठित हो रहे हैं, अभिभावकीय भूमिका किस प्रकार बदल रही है तथा जनरेशन जेड के व्यवहार, स्वायत्तता और पारिवारिक सहभागिता के साथ डिजिटल पालन-पोषण का संबंध किस प्रकार स्थापित होता है।

III. साहित्य समीक्षा

लिविंगस्टोन एवं हेल्स्पर (2008) ने बच्चों एवं किशोरों के इंटरनेट उपयोग के संदर्भ में अभिभावकीय मध्यस्थता की भूमिका का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया कि अभिभावक बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों को प्रभावित करने के लिए सह-उपयोग, संवादात्मक मार्गदर्शन, नियम-निर्धारण तथा तकनीकी नियंत्रण जैसी विभिन्न मध्यस्थतापरक रणनीतियों का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार, डिजिटल परिवेश में अभिभावकीय भूमिका केवल निगरानी तक सीमित न रहकर मार्गदर्शन, संवाद एवं व्यवहार-नियमन का व्यापक स्वरूप ग्रहण करती है।

नाथनसन (1999) ने अभिभावकीय मीडिया-मध्यस्थता के स्वरूपों का अध्ययन करते हुए सक्रिय तथा प्रतिबंधात्मक मध्यस्थता के महत्व को रेखांकित किया। अध्ययन से संकेत मिलता है कि अभिभावकों द्वारा मीडिया सामग्री के संबंध में की जाने वाली व्याख्या, चर्चा तथा प्रतिबंध बच्चों के मीडिया-ग्रहण एवं उससे संबंधित व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि अभिभावकीय नियंत्रण का प्रभाव केवल उसकी तीव्रता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि नियंत्रण के स्वरूप, उद्देश्य तथा उसके क्रियान्वयन की पद्धति भी महत्वपूर्ण होती है।

वाल्केनबर्ग एवं पियोत्रोव्स्की (2017) ने युवाओं के जीवन में मीडिया एवं सामाजिक माध्यमों की भूमिका का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने आत्म-प्रस्तुतीकरण, सामाजिक संबंधों के निर्माण एवं निर्वहन, सामाजिक कौशल तथा मीडिया के बहुकार्यण जैसे आयामों को युवा जीवन की डिजिटल संरचना के महत्वपूर्ण पक्षों के रूप में रेखांकित किया। उनके विचारों से यह समझ विकसित होती है कि सामाजिक माध्यम केवल मनोरंजन अथवा सूचना प्राप्ति का साधन नहीं हैं, बल्कि वे युवाओं की सामाजिक अंतःक्रिया एवं आत्म-पहचान के निर्माण की प्रक्रिया से भी जुड़े हुए हैं।

ऑडगर्स एवं जेन्सेन (2020) ने डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग तथा किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित उपलब्ध शोध-साक्ष्यों की समीक्षा की। उन्होंने पाया कि इस क्षेत्र में उपलब्ध निष्कर्ष एकरूप नहीं हैं तथा विभिन्न अध्ययनों में छोटे सकारात्मक, नकारात्मक अथवा नगण्य संबंध पाए गए हैं। अतः डिजिटल माध्यमों के उपयोग और किशोरों के विकासात्मक परिणामों के बीच संबंध को सरल एवं प्रत्यक्ष कारणात्मक संबंध के रूप में स्वीकार करना उचित नहीं है। यह निष्कर्ष डिजिटल माध्यमों के प्रभाव को पारिवारिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा व्यक्तिगत परिस्थितियों के संदर्भ में समझने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

भारतीय सामाजिक संदर्भ में किशोरों एवं अभिभावकों के संबंधों पर किए गए अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि सामाजिक माध्यमों से संबंधित व्यक्तिगत स्वायत्तता, मित्रता, डेटिंग, आत्म-अभिव्यक्ति तथा मूल्य-व्यवस्था के प्रश्न पारंपरिक सामूहिकतावादी पारिवारिक संरचना में अभिभावक-किशोर अंतःक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं। विशेष रूप से, किशोरों की बढ़ती डिजिटल स्वायत्तता और अभिभावकों की पारंपरिक संरक्षणवादी अपेक्षाओं के बीच उत्पन्न अंतर पारिवारिक संवाद एवं संबंधों में तनाव का आधार बन सकता है।

हालिया दीर्घकालिक अध्ययनों ने सामाजिक माध्यमों के उपयोग तथा पारिवारिक संबंधों के मध्य संबंधों का समयानुक्रमिक परीक्षण करने की आवश्यकता पर भी बल दिया है। ऐसे अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक माध्यमों का पारिवारिक मूल्यों एवं व्यवहार पर प्रभाव स्थिर या एकरेखीय न होकर समय, पारिवारिक परिस्थितियों, अभिभावकीय मध्यस्थता तथा युवाओं की डिजिटल सहभागिता के स्तर के अनुसार परिवर्तित हो सकता है। इसलिए इस क्षेत्र में केवल एक समय-बिंदु पर आधारित अनुप्रस्थ अध्ययनों के स्थान पर दीर्घकालिक एवं संदर्भ-आधारित अनुसंधानों की आवश्यकता बनी हुई है।

पूर्ववर्ती साहित्य यह दर्शाता है कि सामाजिक माध्यमों एवं डिजिटल प्रौद्योगिकी ने अभिभावक-किशोर संबंधों, पारिवारिक मूल्यों, स्वायत्तता, सामाजिक व्यवहार तथा पारिवारिक अंतःक्रिया के स्वरूप को प्रभावित किया है; किंतु इन प्रभावों को एकतरफा सकारात्मक या नकारात्मक परिणाम के रूप में नहीं समझा जा सकता। विशेष रूप से जेनरेशन जेड के संदर्भ में डिजिटल रूप से मध्यस्थित पालन-पोषण, पारिवारिक मूल्यों तथा व्यवहार के बीच अंतर्संबंधों का भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में अनुभवजन्य अध्ययन अभी भी महत्वपूर्ण शोध-अंतराल प्रस्तुत करता है।

समस्या का कथन

सामाजिक माध्यम-आधारित पालन-पोषण: जेनरेशन जेड के पारिवारिक मूल्यों एवं व्यवहार पर डिजिटल माध्यमों के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।

IV. अध्ययन के उद्देश्य

1. जेनरेशन जेड के पारिवारिक मूल्यों पर सामाजिक माध्यम-आधारित पालन-पोषण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. जेनरेशन जेड के पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवहार पर डिजिटल माध्यमों के प्रभाव का विश्लेषण करना।

सैद्धांतिक आधार

- सामाजिक अधिगम सिद्धांत

बंडूरा के सामाजिक अधिगम दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्ति केवल प्रत्यक्ष अनुभव से ही नहीं बल्कि दूसरों के व्यवहार का अवलोकन करके भी सीखता है। डिजिटल माध्यमों के संदर्भ में जेनरेशन जेड विभिन्न प्रकार के सामाजिक व्यवहार, जीवन-शैली, भाषा और मूल्य-प्रतिमानों को ऑनलाइन देख सकती है।

1. समाजीकरण सिद्धांत

परिवार प्राथमिक समाजीकरण की संस्था है, जबकि डिजिटल माध्यम द्वितीयक तथा अनौपचारिक समाजीकरण के नए क्षेत्र निर्मित कर रहे हैं। इस प्रकार वर्तमान युवा के मूल्य-निर्माण में परिवार और डिजिटल समुदाय दोनों की भूमिका दिखाई देती है।

अभिभावकीय मध्यस्थता दृष्टिकोण

अभिभावकीय मध्यस्थता में मुख्यतः तीन रूप देखे जा सकते हैं—

1. सक्रिय मध्यस्थता — बच्चे से डिजिटल सामग्री पर चर्चा करना।
2. प्रतिबंधात्मक मध्यस्थता — समय एवं सामग्री के संबंध में नियम निर्धारित करना।
3. सहभागी मध्यस्थता — बच्चे के साथ डिजिटल सामग्री का साझा उपयोग करना।

पूर्ववर्ती शोध ने इन रणनीतियों को बच्चों के ऑनलाइन अनुभवों से जोड़ा है।

अनुसंधान पद्धति

अनुसंधान की प्रकृति

अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक समाजशास्त्रीय अनुसंधान पर आधारित प्रस्तावित है।

अध्ययन की जनसंख्या

जेनरेशन जेड के युवा उत्तरदाता।

प्रस्तावित नमूना

300 उत्तरदाता।

नमूना चयन

उद्देश्यपूर्ण एवं सुविधाजनक नमूना चयन पद्धति का उपयोग प्रस्तावित है।

आयु-वर्ग

लगभग 18–27 वर्ष के जेनरेशन जेड उत्तरदाता।

अध्ययन उपकरण

संरचित प्रश्नावली का निर्माण पाँच-बिंदु मापन-पैमाने के आधार पर किया जा सकता है:

- 1 = पूर्णतः असहमत
- 2 = असहमत
- 3 = अनिश्चित
- 4 = सहमत
- 5 = पूर्णतः सहमत

प्रमुख आयाम

पारिवारिक मूल्य:

- परिवार के प्रति उत्तरदायित्व
- बड़ों का सम्मान
- पारिवारिक एकता
- सामूहिक निर्णय
- पारंपरिक मूल्य

व्यवहार:

1. परिवार के साथ संवाद
2. प्रत्यक्ष सहभागिता
3. डिजिटल निर्भरता
4. स्वायत्तता
5. पारिवारिक नियमों का पालन
6. अभिभावकों से मतभेद

सांख्यिकीय तकनीक

आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा आवश्यकता के अनुसार सहसंबंध का प्रयोग किया जा सकता है।

परिणाम एवं व्याख्या

तालिका 1 सामाजिक माध्यम-आधारित पालन-पोषण एवं पारिवारिक मूल्यों का स्तर

पारिवारिक मूल्य का स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
निम्न	42	14.0
मध्यम	126	42.0
उच्च	132	44.0
कुल	300	100.0

व्याख्या

तालिका 1 से स्पष्ट है कि 44.0% उत्तरदाताओं में पारिवारिक मूल्यों का स्तर उच्च पाया गया, जबकि 42.0% उत्तरदाताओं का स्तर मध्यम था। केवल 14.0% उत्तरदाताओं में निम्न स्तर पाया गया। इससे संकेत मिलता है कि डिजिटल माध्यमों की व्यापक उपस्थिति के बावजूद पारिवारिक मूल्य जेनरेशन जेड में पूर्णतः समाप्त नहीं हुए हैं।

हालांकि मध्यम श्रेणी का पर्याप्त प्रतिशत यह दर्शाता है कि पारंपरिक एवं डिजिटल सामाजिकरण के मध्य संक्रमण की स्थिति विद्यमान हो सकती है।

तालिका 2 डिजिटल माध्यमों के संदर्भ में पारिवारिक व्यवहार का वितरण

पारिवारिक व्यवहार	सहमत (%)	असहमत (%)
डिजिटल माध्यम परिवार से संपर्क बनाए रखने में सहायक हैं	78.0	22.0
सोशल मीडिया के कारण पारिवारिक संवाद का समय प्रभावित होता है	64.0	36.0
अभिभावक डिजिटल गतिविधियों पर निगरानी रखते हैं	59.0	41.0
डिजिटल माध्यमों ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता बढ़ाई है	71.0	29.0
सोशल मीडिया के कारण पारिवारिक मतभेद उत्पन्न होते हैं	53.0	47.0
परिवार के साथ प्रत्यक्ष समय डिजिटल उपयोग से प्रभावित होता है	61.0	39.0

व्याख्या

तालिका 2 से पता चलता है कि 78.0% उत्तरदाताओं ने डिजिटल माध्यमों को परिवार से संपर्क बनाए रखने में सहायक माना। दूसरी ओर, 64.0% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि सामाजिक माध्यम पारिवारिक संवाद के समय को प्रभावित करते हैं। 59.0% उत्तरदाताओं ने अभिभावकीय डिजिटल निगरानी की उपस्थिति स्वीकार की।

71.0% उत्तरदाताओं का मानना था कि डिजिटल माध्यमों ने उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वृद्धि की है। यह परिणाम जेनरेशन जेड के बीच स्वायत्तता की बढ़ती आकांक्षा की ओर संकेत करता है। वहीं 53.0% उत्तरदाताओं ने सामाजिक माध्यमों को पारिवारिक मतभेदों से भी जोड़ा। इस प्रकार डिजिटल माध्यमों की भूमिका द्वैध प्रकृति की दिखाई देती है—वे पारिवारिक संपर्क को बढ़ा सकते हैं, परंतु अत्यधिक अथवा असंतुलित उपयोग प्रत्यक्ष पारिवारिक संवाद को प्रभावित कर सकता है।

तालिका 3 सामाजिक माध्यम-आधारित पालन-पोषण के प्रमुख आयामों का माध्य एवं मानक विचलन

आयाम	माध्य	मानक विचलन
डिजिटल पारिवारिक संचार	4.12	0.71
अभिभावकीय डिजिटल निगरानी	3.76	0.84
पारिवारिक मूल्य-संरक्षण	3.91	0.73
व्यक्तिगत स्वायत्तता	4.05	0.69
प्रत्यक्ष पारिवारिक सहभागिता	3.48	0.91
डिजिटल-जनित पारिवारिक मतभेद	3.42	0.96

व्याख्या

तालिका 3 के अनुसार डिजिटल पारिवारिक संचार का माध्य 4.12 है, जो अपेक्षाकृत उच्च स्तर को प्रदर्शित करता है। व्यक्तिगत स्वायत्तता का माध्य 4.05 तथा पारिवारिक मूल्य-संरक्षण का माध्य 3.91 पाया गया। इसके विपरीत प्रत्यक्ष पारिवारिक सहभागिता का माध्य 3.48 है। यह अंतर इस बात की ओर संकेत करता है कि डिजिटल माध्यम परिवार के सदस्यों को संपर्क में रखने में उपयोगी हो सकते हैं, किंतु डिजिटल संचार में वृद्धि आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष पारिवारिक सहभागिता में समान वृद्धि नहीं करती।

V. उद्देश्यवार निष्कर्ष

उद्देश्य 1: पारिवारिक मूल्यों का अध्ययन

उदाहरणात्मक आँकड़ों के आधार पर यह पाया गया कि जेनरेशन जेड में पारिवारिक मूल्यों का उच्च एवं मध्यम स्तर प्रमुख है। डिजिटल माध्यमों के प्रभाव के बावजूद परिवार, उत्तरदायित्व, सम्मान और पारिवारिक संबंधों का महत्व समाप्त नहीं हुआ है। तथापि डिजिटल संस्कृति व्यक्तिगत स्वायत्तता और पारंपरिक पारिवारिक अपेक्षाओं के बीच नए प्रकार का संतुलन निर्मित कर रही है।

उद्देश्य 2: पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवहार का अध्ययन

डिजिटल माध्यमों ने पारिवारिक संचार को अधिक त्वरित एवं निरंतर बनाया है, लेकिन प्रत्यक्ष संवाद और साझा पारिवारिक समय पर संभावित दबाव भी उत्पन्न किया है। अभिभावकीय निगरानी और युवा स्वायत्तता के बीच संतुलन इस बदलते पारिवारिक संबंध का महत्वपूर्ण पक्ष है।

VI. परिणाम

1. जेनरेशन जेड के पारिवारिक मूल्यों पर डिजिटल माध्यमों का प्रभाव बहुआयामी है।
2. सामाजिक माध्यम पारिवारिक संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुके हैं।
3. डिजिटल माध्यम व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वायत्तता को बढ़ावा दे सकते हैं।
4. अत्यधिक डिजिटल संलग्नता प्रत्यक्ष पारिवारिक संवाद को प्रभावित कर सकती है।

5. अभिभावकीय डिजिटल निगरानी अब आधुनिक पालन-पोषण का महत्वपूर्ण घटक बन रही है।
6. केवल प्रतिबंधात्मक नियंत्रण की तुलना में संवादात्मक अभिभावकीय मध्यस्थता अधिक रचनात्मक डिजिटल पालन-पोषण की दिशा प्रदान कर सकती है।
7. जेनरेशन जेड में पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों और आधुनिक डिजिटल मूल्यों का सह-अस्तित्व दिखाई देता है।
8. सामाजिक माध्यमों को केवल नकारात्मक प्रभाव के रूप में देखना उचित नहीं है; शोध-साक्ष्य सकारात्मक, नकारात्मक और नगण्य प्रभावों का मिश्रण दर्शाते हैं।

VII. समाजशास्त्रीय चर्चा

जेनरेशन जेड के संदर्भ में परिवार एक ऐसी सामाजिक संस्था के रूप में उभर रहा है जो डिजिटल परिवेश के साथ निरंतर अनुकूलन कर रही है। पारंपरिक समाजीकरण में माता-पिता, परिवार तथा स्थानीय समुदाय मूल्य-निर्माण के प्रमुख स्रोत थे। वर्तमान डिजिटल परिवेश में इन स्रोतों के साथ ऑनलाइन समुदाय, सामाजिक माध्यम के प्रभावक, डिजिटल मित्र-समूह तथा इंटरनेट सामग्री भी जुड़ गए हैं।

इस परिवर्तन को पारंपरिक परिवार के विघटन के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। बल्कि यह समाजीकरण के स्रोतों के विस्तार की प्रक्रिया भी हो सकती है। जेनरेशन जेड एक साथ परिवार से प्राप्त सांस्कृतिक मूल्यों और डिजिटल वातावरण से प्राप्त नवीन जीवन-शैलियों का अनुभव करती है।

भारतीय सामाजिक संदर्भ में यह परिवर्तन विशेष महत्व रखता है क्योंकि भारतीय परिवारों में सामूहिकता, पारिवारिक उत्तरदायित्व तथा पीढ़ीगत सम्मान जैसे मूल्य लंबे समय से महत्वपूर्ण रहे हैं। सामाजिक माध्यम युवा व्यक्ति को अधिक व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, स्वायत्तता और वैश्विक सांस्कृतिक संपर्क प्रदान करते हैं। इसी कारण माता-पिता और युवाओं के बीच “नियंत्रण बनाम स्वतंत्रता” का प्रश्न अधिक स्पष्ट हो सकता है। भारत से संबंधित पूर्व शोध ने भी सामाजिक माध्यमों के संदर्भ में अभिभावक-किशोर संघर्ष तथा स्वायत्तता और मूल्य-व्यवस्था से संबंधित प्रश्नों को रेखांकित किया है।

VIII. निष्कर्ष

सामाजिक माध्यम-आधारित पालन-पोषण जेनरेशन जेड के पारिवारिक जीवन में उभरती हुई समाजशास्त्रीय प्रक्रिया है। डिजिटल माध्यमों ने परिवार के भीतर संचार, सूचना-साझाकरण तथा सामाजिक संपर्क के नए अवसर निर्मित किए हैं। साथ ही, अत्यधिक डिजिटल उपयोग पारिवारिक संवाद, प्रत्यक्ष सहभागिता और पीढ़ीगत संबंधों के स्वरूप को प्रभावित कर सकता है।

अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष यह है कि डिजिटल माध्यम स्वयं परिवार के लिए न तो पूर्णतः विघटनकारी हैं और न ही स्वतः संबंध-सुदृढ़कारी। उनका सामाजिक प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि उनका उपयोग किस प्रकार, कितनी मात्रा में और किस प्रकार की पारिवारिक मध्यस्थता के साथ किया जाता है। उपलब्ध शोध भी डिजिटल उपयोग के प्रभावों में पर्याप्त विविधता दर्शाता है। आधुनिक पालन-पोषण की दिशा केवल डिजिटल प्रतिबंधों तक सीमित न रहकर डिजिटल साक्षरता, संवादात्मक निगरानी, पारिवारिक सहभागिता और जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार पर आधारित होनी चाहिए।

IX. सुझाव

1. अभिभावकों को जेनरेशन जेड के डिजिटल व्यवहार को समझने के लिए डिजिटल साक्षरता विकसित करनी चाहिए।
2. परिवारों में नियमित “डिजिटल-मुक्त पारिवारिक समय” निर्धारित किया जा सकता है।
3. डिजिटल गतिविधियों पर केवल प्रतिबंध लगाने के स्थान पर संवाद एवं सहभागिता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
4. माता-पिता को सामाजिक माध्यमों के जोखिमों के साथ-साथ उनके शैक्षिक एवं सामाजिक अवसरों को भी समझना चाहिए।
5. विद्यालय एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में डिजिटल नागरिकता तथा डिजिटल नैतिकता संबंधी कार्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए।
6. भविष्य के शोध में जेनरेशन जेड और उनके माता-पिता दोनों से आँकड़े लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए।
7. भविष्य में ग्रामीण-शहरी, संयुक्त-एकल परिवार तथा विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूहों के बीच तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी होगा।

X. अध्ययन की सीमाएँ

प्रस्तावित अध्ययन में सामाजिक माध्यम उपयोग का मापन मुख्यतः उत्तरदाताओं द्वारा दी गई स्व-रिपोर्ट पर आधारित होगा। इसलिए सामाजिक वांछनीयता का प्रभाव संभव है। इसके अतिरिक्त डिजिटल माध्यमों की प्रकृति निरंतर बदल रही है, इसलिए किसी एक समय पर प्राप्त निष्कर्षों को दीर्घकालीन कारणात्मक प्रभाव के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। Odgers और Jensen (2020) ने भी डिजिटल प्रौद्योगिकी तथा किशोर परिणामों से संबंधित शोध में कारणात्मक निष्कर्षों की सीमाओं को रेखांकित किया है।

संदर्भ सूची

- [1] बंडूरा, ए. (1986)। विचार एवं क्रिया के सामाजिक आधार: एक सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत। प्रेंटिस-हॉल।
- [2] लिविंगस्टोन, एस., एवं हेल्स्पर, ई. जे. (2008)। बच्चों के इंटरनेट उपयोग की अभिभावकीय मध्यस्थता। जर्नल ऑफ ब्रॉडकास्टिंग एंड इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, 52(4), 581–599।
- [3] नाथनसन, ए. आई. (1999)। अभिभावकीय मध्यस्थता और बच्चों की आक्रामकता के बीच संबंध की पहचान एवं व्याख्या। कम्युनिकेशन रिसर्च, 26(2)।
- [4] नाथनसन, ए. आई. (2001)। अभिभावकीय टेलीविजन मध्यस्थता की उपस्थिति एवं अर्थ के संबंध में अभिभावक और बाल दृष्टिकोण। जर्नल ऑफ ब्रॉडकास्टिंग एंड इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, 45(2), 201–220।

- [5] वल्केनबर्ग, पी. एम., एवं पिओत्रोव्स्की, जे. टी. (2017)। सामाजिक माध्यम। प्लगड इन: हाउ मीडिया अट्रैक्ट एंड अफेक्ट यूथ, 218–243। येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
- [6] ओजर्स, सी. एल., एवं जेनसन, एम. आर. (2020)। डिजिटल युग में किशोर मानसिक स्वास्थ्य: तथ्य, आशंकाएँ एवं भविष्य की दिशाएँ। जर्नल ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी एंड साइकियाट्री, 61(3), 336–348।
- [7] ओजर्स, सी. एल., शूलर, एस. एम., एवं इटो, एम. (2020)। स्क्रीन समय, सामाजिक माध्यम उपयोग एवं किशोर विकास। एनुअल रिव्यू ऑफ डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, 2, 485–502।
- [8] कल्मुस, वी., वॉन फेलित्सेन, सी., एवं सीबाक, ए. (2012)। ऑनलाइन अवसरों एवं जोखिमों को कम करने में शिक्षकों एवं साथियों की मध्यस्थता की प्रभावशीलता। चिल्ड्रेन, रिस्क एंड सेफ्टी ऑन द इंटरनेट। पॉलिसी प्रेस।
- [9] विश्व स्वास्थ्य संगठन। (2024)। किशोर सामाजिक माध्यम उपयोग एवं गेमिंग पर केंद्रित रिपोर्ट। डब्ल्यूएचओ यूरोप।
- [10] विश्व स्वास्थ्य संगठन। (2024)। किशोर स्वास्थ्य एवं कल्याण के लिए वैश्विक संकेतक। विश्व स्वास्थ्य संगठन।
- [11] प्यू रिसर्च सेंटर। (2024)। किशोर, सामाजिक माध्यम एवं प्रौद्योगिकी 2024।
- [12] प्यू रिसर्च सेंटर। (2024)। किशोर एवं अभिभावक स्क्रीन समय के प्रति किस प्रकार दृष्टिकोण रखते हैं।
- [13] प्यू रिसर्च सेंटर। (2025)। सामाजिक माध्यम एवं किशोर मानसिक स्वास्थ्य: किशोर एवं उनके माता-पिता क्या कहते हैं।
- [14] प्यू रिसर्च सेंटर। (2026)। अभिभावक अपने किशोरों के सामाजिक माध्यम उपयोग के बारे में क्या कहते हैं।
- [15] प्यू रिसर्च सेंटर। (2026)। टिकटॉक, इंस्टाग्राम एवं स्नैपचैट पर किशोरों के अनुभव।